आग्रह पर उन्होंने अपनी सांसद–निधि से महाविद्यालय को ग्यारह लाख रूपये की धनराशि दी थी। एक लाख का सहयोग शिक्षक विधायक श्री राजबहादुर सिंह चन्देल ने किया। उक्त धनराशि से सन् 2006 में विज्ञान संकाय का भवन बनकर तैयार हुआ। अपनी निधि के सही उपयोग के लिए वे कितने सजग थे, एक उदाहरण द्रष्टव्य है– जब हम लोगों ने उनसे आग्रह किया कि किसी सरकारी कार्यदायी संस्था के माध्यम से उक्त निर्माण कार्य करा दें, तो उनका सुझाव था कि यह कार्य महाविद्यालय स्वयं कराये क्योंकि कार्यदायी संस्थाओं द्वारा बहुत से धन के दुरुपयोग की आशंका रहती है।

11 फरवरी 2006 को उक्त भवन का भव्य लोकार्पण समारोह हुआ जिसमें कोविन्द जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन दिनों वे भारतीय जनता पार्टी के अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री एवं सांसद श्री राधेश्याम कोरी भी उपस्थित थे। संचालन का दायित्व मुझे दिया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापकों एवं समाजसेवियों का सम्मान भी किया गया।

कोविन्द जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे स्वयं कम बोलते हैं, दूसरों को ज्यादा सुनते हैं। चुप रहते हुए भी उनकी आँखे बोलती हुई लगती हैं। सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति कोविन्द जी अनेकशः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यक्रमों में सम्मिलित होते तो हम लोगों के बीच चुपचाप दरी पर बैठ जाते। कहीं से भी यह लगता कि वे एक लोकप्रिय नेता और राज्य सभा सदस्य हैं। कोई भी व्यक्ति उनके पास अपनी समस्या लेकर जाता तो पूरी संवेदना और तल्लीनता से उसकी बात सुनते और तत्काल समाधान भी करते। एक दिन वे हमारे कॉलेज आये। उन्हें वापस कानपुर जाना था। मेरे मित्र और वरिष्ठ पत्रकार श्री केदार द्विवेदी एवं मुझे भी कानपुर जाना था। कोविन्द जी अपने वाहन से हम लोगों को अपने साथ ले गये। मैने देखा कि पूरे रास्ते वे मोबाइल से किसी न किसी परेशान व्यक्ति की समस्या का निराकरण करने के लिए अधिकारियों (डी0एम0, एस0पी0 आदि) को फोन करते रहे। दिल्ली में अधिवक्ता रहने के दौरान 'फ्री लीगल एड सोसाइटी' के माध्यम से उन्होंने निर्धनों, निराश्रितों विशेषकर पीड़ित महिलाओं को निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराई।

कोविन्द जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक अभिनन्दन स्मारिका के संदेश में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लिखा था कि, ''उनका राजनीतिक जीवन निर्विवाद तथा समाज के शोषित, पीड़ित वर्ग के कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहा है। श्री कोविन्द जी एक उदार हृदय, विनम्र और जनहित के कार्यों के प्रति समर्पित राजनेता हैं।'' तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत ने उनके बारे में लिखा था कि, ''एक जागरूक सांसद के रूप में आपने सदैव गरीबों और दलितों की पीड़ा को सदन में स्वर दिया है।'' सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक व्यक्तित्त्व श्री विजय कौशल महाराज ने आपके बारे में कहा था कि, ''हमारे कोविन्द जी तो सेवा, शिष्टता, सौम्यता और शीलता के साक्षात् स्वरूप हैं। वे तो इन सद्गुणों के जीवित, जाग्रत ग्रन्थ हैं।'' डॉ0 मुरली मनोहर जोशी ने उनके विषय में लिखा था कि, ''श्री कोविन्द जी ऐसी राजनीति में आस्था रखते हैं जो नैतिक मूल्यों को आचरण द्वारा प्रस्थापित करने में विश्वास रखती है।''

यह मेरा सौभाग्य है कि कानपुर देहात जनपद में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न रहने के दौरान मुझे अनकेशः उनका मार्गदर्शन एवं सान्निध्य प्राप्त होता रहा। वे मेरे वक्तव्य से प्रभावित रहते थे  और एक बार कार्यक्रम के दौरान सर्वश्रेष्ठ वक्ता के विशेषण

सेसम्बोधित किया था (ऐसा हूँ नहीं) पर यह उनकी आत्मीयता है। चुनाव के दौरान दो बार मेरे निवास पर उनका आगमन हुआ। सन् 2007 में वे भोगनीपुर विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी थे और मेरे साले शशांक शेखर मिश्र, राजपुर विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी थे। मैं राजपुर विधानसभा क्षेत्र में शशांक के चुनाव की व्यवस्था में अत्यंत व्यस्त रहता था तब एक दिन वे श्री उदयनारायण अग्रवाल के साथ सुबह ही मेरे घर आये। उदयनारायण जी को मालूम था कि मैं सुबह ही राजपुर निकल जाता हूँ और देर रात घर लौटता हूँ। कोविन्द जी ने मुस्कराते हुए मुझसे कहा कि, ''मुझे मालूम है कि आप राजपुर के चुनाव में दूसरी पार्टी के लिए कार्य कर रहे हैं, पर यहाँ मेरे लिए वोट मांगिए।'' तब मैने अपने वार्ड में घर–घर जाकर उनके लिए वोट मांगे। चुनाव के दौरान उनका प्रवास मेरे घर के निकट श्री केदार द्विवेदी के निवास पर था, जहाँ नित्य ही सायं उनसे मुलाकात होती रहती। मीडिया रिपोर्ट अनेकशः मैं ही तैयार करता था।

विगत में बिहार का राज्यपाल एवं पश्चात् राष्ट्रपति बनने पर अनेकशः मुलाकातें हुईं पर कहीं से यह नहीं लगा कि वे पहले जैसे कोविन्द जी नहीं है। बिहार का राज्यपाल बनाये जाने पर 9 दिसम्बर 1915 को पुखरायाँ में उनका भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वक्तव्य देने का निर्देश मुझे कार्यक्रम के संयोजक श्री मधुसूदन द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में उनकी एक बात सभी के दिलों को छू गई। उन्होंने कहा कि, ''मैं आपका वही रामनाथ हूँ, पद तो आज है, कल नहीं रहेगा; पर मैं आपका मित्र, जैसा पहले था, आज हूँ, और आगे भी रहूँगा।'' दिनांक 10 जून 2017 को कानपुर में 'भारतीय विचारक समिति' के एक समारोह में वे आये थे और मंच पर उपस्थित श्री बलराम नरुला, नीलाम्बर कौशिक, डॉ0 अवध दुबे, श्री उमेश दीक्षित और हम सभी के साथ सौम्यता और सहजता से बातें करते रहे। अभी हाल में 28 जून 2018 को कानपुर आगमन पर उनसे मुलाकात हुई। आत्मीयता से मिलें फोटो वाले को फोटो खींचने का इशारा किया और पूछा, ''आजकल क्या लिख–पढ़ रहे हैं?''

कोविन्द जी की नेतृत्व–यात्रा के अनेक सोपान हैं जिनके माध्यम से वे निरन्तर सामाजिक सेवाओं में संलग्न रहे। विशेषतः समाज के पीड़ित, शोषित, निर्धन वर्ग के कल्याणार्थ आपकी सेवायें उल्लेखनीय हैं। प्रत्येक क्षेत्र में वे अपनी सज्जनता और कर्त्तव्यपरायणता के लिए प्रसिद्ध रहे। दृढ़निश्चयी, वाणी के प्रति संयमी, न्यायप्रिय, सहृदय, विनम्र और विद्वान कोविन्द जी आज देश के राष्ट्रपति पद को सुशोभित कर रहे हैं। यह हम सबके लिए गर्व का विषय है।

सम्पर्क : 117/254, पी.ब्लाक, हितकारी नगर, काकादेव, कानपुर-208025, मो0 9839970460

# हमारा कानपुर : एक विमर्श

**नीलाम्बर कौशिक**
अध्यक्ष
साहित्य महारथी पं0 विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक
स्मारक समिति कानपुर

खानपारे , कान्हपूर, कवनपुर और न जाने कितने नामों से यह जाना जाता रहा है। पिछले प्राप्त प्रमाणों में इसे विभिन्न नामों से तथा विभिन्न तरीकों से जाना जाता था। बाद में यह कवनपुर के नाम से स्थापित हुआ। यह कान्हा और कनकैया के युगल से बना था। कान्हा, भगवान कृष्ण के नाम पर और दूसरे शब्द का अर्थ गरीब था। यह एक गाँव था जिसका सूबेदार कान्हा के नाम से प्रसिद्ध था, जिसने सन् 1750 के आसपास कान्हापुर की स्थापना की थी। यहाँ पर लगभग तीन हजार परिवार निवास करते थे। यह अत्यंत रमणीक तथा स्नान हेतु गगांघाट के कारण प्रसिद्ध था। उस समय उत्तर भारत में मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय का पतन मराठा सेनाओं द्वारा किया गया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी, सन् 1601 में लदंन के व्यापारियों के समूह से स्थापित हुई थी। भारत के मसाले विश्व भर में प्रसिद्ध थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी व्यापार हेतु भारत में आये और सर्वप्रथम उन्होनें कलकत्ता में व्यापार प्रारम्भ किया। उसके उपरान्त जब वे पूर्व से उत्तर की ओर गंगा नदी के रास्ते बढ़ रहे थे कानपुर ने उनका ध्यानाकर्षण किया। उन्हें महसूस हुआ कि कलकत्ता से कानपुर तक उनके जहाज बेरोक-टोक आ जा सकते हैं। उन्होंने इसे व्यापार हेतु उपयुक्त समझा और यहाँ अपना व्यापार बढ़ाने हेतु प्रयास करना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ पर एक-एक करके स्थानों पर कब्जा करना आरम्भ कर दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी सेना बनाई जिससे वे शासकों को परास्त करके यहाँ पर अपना राज्य स्थापित करने की योजना बना रहे थे।

कानपुर में स्थित बिठूर अत्यन्त प्राचीन तथा पवित्र स्थान है वह गंगा नदी के तट पर बसा है। यह कहा जाता है कि संत वाल्मीकि ने रामायण का सृजन यहीं किया था। उन्होंने सीता जी को यहीं अपने आश्रम में आश्रय दिया था। सीता जी ने बिठूर में ही जुड़वा पुत्रों लव और कुश को जन्म दिया था। इस प्रकार हिन्दू पौराणिक मान्यताओं में बिठूर का धार्मिक महत्व है। 18वीं सदी के पूर्व नवाब वजीर जो अवध के नवाब थे के अंग्रेजों द्वारा परास्त हो जाने से यह उनके आधीन हो गया। अंग्रेजों ने कानपुर को अपना मिलिट्री बेस बनाया। सन् 1803 में कानपुर डिस्ट्रिक्ट बनाया गया और अंग्रेजों द्वारा इसका नामकरण कवनपुर (Cawnpore) कर दिया।

आजादी की लड़ाई में कानपुर का अपना महत्व रहा है। सन् 1857 में कानपुर में विद्रोह के रूप में बलबा होने से यह आजादी की लड़ाई का मुख्य केन्द्र बना। इसका कारण स्वतंत्रता संग्राम में जूझने वाले नाना साहब पेशवा तथा उनके सहयोगी तात्या टोपे एवं अजीमुल्लाह खान थे। कानपुर गवाह बना तीन मुख्य घटनाक्रमों का प्रथम, ''व्हीलर के ऐन्ट्रेन्चमैन्ट, द्वितीय ''सत्ती चौरा घाट का कत्ले आम'' तथा ''बीबी घर कत्लेआम''। नाना साहब ने दुबारा कानपुर पर कब्जा करने का निश्चय किया तथा स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। उन्होंने 5 जून 1857 को जनरल व्हीलर को पत्र लिखकर सूचित किया कि उनके द्वारा किये गये आक्रमण से

अब कानपुर पर उनका कब्जा है। नाना साहब ने एक नोट स्त्री कैदी श्रीमती जेकाबी को आत्मसमर्पण करने हेतु भेजा और इसके बदले उन्हें सुरक्षित इलाहाबाद पहुंचाने की पेशकश की। इस प्रसिद्ध घटना को व्हीलर ऐन्ट्रेन्चमैन्ट के नाम से जाना गया था। अगली सुबह जब अंग्रेज स्त्रियाँ और बच्चे सत्तीचौरा घाट पर नाव में सवार होने जा ही रहे थे, कि अचानक किसी भ्रम के कारण उन पर आक्रमण कर दिया गया जिसमें बहुत सी मौतें हुई। इसे ''सत्तीचौरा काण्ड'' का नाम दिया गया। उनमें से जो बचे हुये लोग जिसमें ज्यादातर स्त्रियाँ और बच्चे थे, बीबी घर ले जाये गये। बीबी घर वह स्थान होता था, जहाँ स्त्रियाँ रहती थीं। नाना साहब ने उन्हें बन्धक रखकर अंग्रेजों से सौदा करने का प्रयास किया जो सफल नहीं हुआ। उन्होंने भारतीय सैनिकों को आदेश देकर बन्धक, स्त्रियों और बच्चों को मरवा दिया। उनकी लाशों को एक कुएँ में दफना दिया गया। यह ''बीबी घर कत्ले आम'' के नाम से जाना गया। जब अंग्रेजों ने पुनः कानपुर पर कब्जा किया, उन्होंने वहाँ पर एक ममोरियल बनवाया और उस पर क्रास लगा दिया जिसे आज भी नानाराव पार्क में देखा जा सकता है। कुएँ का नाम मेमोरियल वैल रखा गया।

1857 की गदर के उपरान्त अंग्रेजी हुकूमत की सोच में अपूर्व परिवर्तन आया। सरकार द्वारा ''हारनेस तथा सैडलरी फैक्ट्री'' का निर्माण किया गया जिसके द्वारा चमड़े का सामान सेना के उपयोग हेतु भेजा गया। शनैः शनैः कॉटन मिल, चमड़े की फैक्ट्रियाँ आदि प्रारम्भ की गई, जिन्होंने कानपुर को एक नई दिशा दी। कान्हापुर से कवनपोर के बाद 21वीं शताब्दी में इसका नाम कानपुर हो गया। यहाँ पर नावों, जहाजों के बे-रोक टोक आने के कारण अंग्रेजों ने इसे कलकत्ते के बाद मुख्य व्यवसायिक केन्द्र बनाया। कलकत्ते के श्रमिक सस्ते एवं मेहनती होने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें कानपुर लाकर बसाया। कानपुर भारत के मानचैस्टर के नाम से जाना जाने लगा। कानपुर पूरे विश्व में लेदर तथा टैक्स्टाइल निर्मित सामान जो बहुत ही अच्छी क्वालिटी का बनता था, के कारण प्रसिद्ध हो गया। धीरे-धीरे सूती कपड़े, आटा, वनस्पति तेल की मिलें, शक्कर की रिफाइनरी तथा रसायन के कारखाने भी प्रारम्भ हुये। जिसके कारण लोगों को न केवल रोजगार प्राप्त हुआ बल्कि रहन-सहन का स्तर भी बढ़ा। अंग्रेजों का यहाँ आधिपत्य स्थापित होने के उपरात भी स्वतंत्रता हेतु लोग जूझते रहे। जिसकी कमान गणेश शंकर विद्यार्थी तथा उनके सहयोगियों के हाथ में थी। विद्यार्थी जी ने प्रताप प्रेस स्थापित करके, ''प्रताप'' अखबार निकाला, जिसमें अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध अनेक आलेख एवं समाचार धड़ल्ले से निकलते थे। भगत सिंह द्वारा जलियाँ वाला बाग के मुख्य अभियुक्त ब्रिटिश सेना अधिकारी के स्थान पर त्रुटिवश एक अन्य सेना अधिकारी को मार देने के कारण हुकूमत के निशाने पर थे। वे कानपुर आ गये और सर के बाल एवं दाढ़ी कटवा कर गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रेस में बलवंत सिंह के छद्म नाम से लिखते रहे। मुखबिरी हो जाने पर वे साहित्यकार तथा स्वतंत्रता संग्राम में लेखन से सहयोग करने वाले पं0 विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक के हवेलीनुमा निवास में कई दिनों तक रहे। इस प्रकार कानपुर का स्वतंत्रता सग्राम में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कानपुर अपनी औद्योगिकता हेतु विश्व में प्रसिद्ध रहा है, आज भी वह चमड़े के उद्योग, कपड़ा मार्केट, प्लास्टिक तथा मसालों के लिये प्रसिद्ध है, यही नहीं यह उन्नत गुणवत्ता के साबुन तथा डिटरजेन्ट प्रोडक्ट्स के उत्पादन में तेजी से आगे बढ़ रहा है। वह दिन दूर नहीं है जब यह अहमदाबाद से कड़ी प्रतिस्पर्धा में आ जायेगा।

पूर्व में जिस प्रकार से उद्योग धन्धे बन्द हुये, अब साबुन और डिटरजेन्ट्स अपनी उन्नत गुणवत्ता के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भी पहचान बना रहा है। माइक्रो स्माल मीडियम इन्टरप्राइजेज (एम0एस0एम0ई0) डेवलपमेन्ट इंस्टीट्यूट, यू0पी0एस0ए0 के संयुक्त प्रयास से शीघ्र ही साबुन तथा डिटरजेन्ट उद्योग शिखर पर पहुँचेगा। वर्तमान में 100 से अधिक साबुन तथा डिटरजेन्ट की यूनिट्स पंजीकृत हैं, यह यूनिट पनकी, चौबेपुर तथा रनिया क्षेत्र में स्थापित हैं। इनमें 3700 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं तथा 700 करोड़ का राजस्व सरकार को प्रदान करते हैं। एक विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि निम्न तकनीकी विकास, कच्चे माल की गुणवत्ता तथा बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा जैसी कई चुनौतियाँ हैं साबुन एवं डिटरजेन्ट उत्पादन के समक्ष, परन्तु संयुक्त प्रयासों से गुणवत्ता तथा उत्पादन में मानको के आधार पर सुधार आने की पूर्ण संभावना है। कानपुर साबुन तथा डिटरजेन्ट उत्पादन का केन्द्र बनने के अत्यन्त करीब है। उपरोक्त उत्पादन के अतिरिक्त कानपुर फूड, एफ0एम0सी0जी0, कृषि सम्बन्धित कम्पनियों के कारण भी प्रसिद्ध है। ये कम्पनियाँ कोठारी प्रोडक्ट्स, आर0एस0पी0एल0 लिमिटेड, हिमगिरी फूड्स, लक्ष्मी आयल एण्ड वनस्पति, मारिया इन्टरनेशनल, मोहनी टी लीव्स प्राइवेट लिमिटेड तथा नमस्ते इण्डिया फूड इत्यादि हैं। वस्त्र एवं टैक्सटाइल क्षेत्र में, जगमिनी माइक्रोनिट, जामा कारपोरेशन, जेयकेय इन्टरप्राइजेज (Jaykay), जे0के0 काटन, थ्रेड्स इण्डिया, विराज सिनटैक्स, ए0के0 इन्डस्ट्रियल फैबरिक्स, जैट निटवियरस तथा एम0एस0एफ0 इत्यादि। लेदर इन्डस्ट्रीज में जो कम्पनियाँ अपने प्रोडक्टस तथा गुणवत्ता के लिये प्रसिद्ध हैं। वे हैं लियान ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड, मिर्जा इन्टरनेशनल, सुपर हाउस, अरविन्द फुटवियर, फ्लोरिश शूज़ नाज़ एक्सपोर्टस, ओमेगा इन्टरनेशनल इत्यादि। कुछ कम्पनियाँ निर्यात तथा आयात के रूप में कानपुर मे ं जानी जाती हैं। वे हैं फ्रोस्ट इंटरनेशनल, जामा कारपोरेशन, नाज़ा एक्स्पोर्टस, अनचित एक्सपोर्ट, कैमिइयो एक्सपोर्ट, चाहत इंटरनेशनल इत्यादि।

कानपुर ऐजूकेशनल हब के रूप में भी जाना जाता है, यहाँ इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आई0आई0टी0), चन्द्रशेखर आजाद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, लेदर इंस्टीट्यूट, टैक्स्टाइल इंस्टीट्यूट, आजाद एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी जो प्रशिक्षार्थियों को टेक्निकली सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त अनेक प्राइवेट इंस्टीट्यूट हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

शहर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमें मुख्य हैं कानपुर प्राणी उद्यान, मोतीझील, ब्लूवर्ड थीम पार्क, नानाराव पार्क, जे0के0 मन्दिर, कानपुर मेमोरियल चर्च, फूलबाग, मैस्करघाट, धर्मनाथ श्वेताम्बर जैन मन्दिर, गंगा बैराज, ब्रह्मावर्त घाट, बुद्धा पार्क, तपेश्वरी देवी मंदिर, आशा देवी मंदिर, बाबा आनन्देश्वर मंदिर, पनकी हनुमान जी का मंदिर तथा कालीजी का मंदिर के अतिरिक्त बिठूर एवं कानपुर के समीपवर्ती क्षेत्र में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

कानपुर अपनी फाकामस्ती, अतिथि देवोभव तथा अलमस्त सोच के कारण अपना एक विशिष्ट स्थान बनाये है। यहाँ के लोग किसी विपत्ति में फंसे लोगों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहते हैं यह ऐसा शहर है जहाँ सभी समुदाय के लोग परस्पर सद्भाव से रहते हैं। दूसरे प्रदेश के लोगों को जिस प्रकार यहाँ के लोग अपना बना लेते हैं इसकी दूसरी मिसाल कहीं अन्यत्र नहीं मिलती है। इसीलिये कानपुर......कानेपुर है हम सबके स्वप्नों की नगरी।

# गुरुदेव सिंह सलूजा

# रायल प्रिंस बैंक्वेट

गुरुदेव, कानपुर

मो. 9936293233

# अंगद सिंह सलूजा

# रायल इन होटल

नियर रेव मोती, कानपुर

मो. 8400214444

# कानपुर का साहित्यिक अवदान

**नलिनी कौशिक**
**साहित्यकार**

देश में जब ब्रिटिश साम्राज्य था तो उर्दू और अंग्रेजी लेखन का वर्चस्व था। हिन्दी एक कोने में उपेक्षित पड़ी थी। हिन्दी के समर्थक एवं हिन्दी लेखकों में छटपटाहट थी। ऐसे में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लेखकों से अनुरोध किया कि वे उर्दू और अंग्रेजी साहित्य का हिन्दी अनुवाद करें। जिसका पालन हुआ और अंग्रेजी, उर्दू और बंगला साहित्य को हिन्दी में अनुवादित किया गया। कुछ समीक्षकों, निबन्ध लेखकों ने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इस ओर प्रमुखता से प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट जैसे लेखकों ने पहल की। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कार्य को आगे बढ़ाते हुये मौलिक हिन्दी रचनओं पर जोर दिया। इसका परिणाम यह हुआ अनेक मौलिक रचनायें प्रकाश में आने लगीं। इस संदर्भ में विभिन्न समीक्षकों और आलोचकों ने हिन्दी विकास में अपने–अपने मत प्रस्तुत किये हैं। मुख्यत: मौलिक रचनाओं (कहानियों) का विकास वर्ष 1910 के उपरान्त माना जाता है, सन् 1911 से 1936 को प्रारम्भिक मौलिक रचनाओं का काल माना गया है। इस काल में अनक रचनाकार प्रकाश में आये। उसका कारण था कि कानपुर में सरस्वती का प्रकाशन सम्बन्धी समस्त कार्य सम्पन्न होता था। इसके सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे, वे कानपुर दक्षिण जूही से पत्रिका निकालते थे। किन्तु प्रकाशन में प्रयाग का उल्लेख किया जाता था। जिसमें कथा–कहानी, कवितायें, निबन्ध तथा लेख सभी को स्थान दिया जाता था। कानपुर की प्रथम कहानी सन् 1912 में पं0 विश्वम्भर नाथ शर्मा द्वारा लिखी गई थी तथा सरस्वती में छपी थी। उसके उपरान्त अनेक लेखकों ने कानपुर में रहकर साहित्य सृजन किया। जिसमें प्रमुखता से बाल कृष्ण शर्मा नवीन, गया प्रसाद सनेही, सतगुरू शरण अवस्थी तथा प्रताप नारायण श्रीवास्तव का नाम लिया जा सकता है। कानपुर में साहित्यिक गतिविधियों से आकर्षित होकर कुछ रचनाकार कानपुर के बाहर से भी आये और उन्होंने यहाँ पर रहकर न केवल सृजन किया बल्कि नाम भी कमाया। उनमें से कुछ विशेष नाम है, भगवती चरण वर्मा, प्रेमचन्द आदि। भगवती चरण वर्मा उन्नाव जनपद के निवासी थे, वे कानपुर अदालत में वकालत करने आये थे। वे प्रारम्भ में कविता लिखते थे। उनका कंठ बहुत सुरीला था, जिसके कारण उन्हें काव्य मंचों पर स्थान मिला। कौशिक जी की एक साहित्यिक मंडली थी जिसे कौशिक मंडली के नाम से जाना जाता था, उसमें कानपुर के वरिष्ठ तथा नवोदित लेखक सम्मिलित होते थे। यह मंडली सुबह, शाम फूलबाग में तथा कौशिक जी के निवास पर जमती थी। भगवती चरण वर्मा उसी मंडली के स्थाई सदस्य हो गये और धीरे–धीरे कविताओं के साथ–साथ उपन्यास भी लिखने लगे। उनका उपन्यास ''चित्रलेखा'' एक बहुचर्चित उपन्यास है जिस पर फिल्म भी बनी थी। उनकी प्रथम कहानी कौशिक जी द्वारा सम्पादित पत्रिका ''हिन्दी मनोरंजन'' में ''इस्टालमेंट'' शीर्षक से छपी थी। उसके उपरान्त प्रायश्चित, शस्त्र और चिंगारी, पराजय और मृत्यु, दो बांके आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपीं। उनके उपन्यास चित्रलेखा, टेढ़े–मेढ़े रास्ते, भूले बिसरे चित्र तथा वह फिर न आई बहुचर्चित रहे। उनकी सम्पूर्ण साहित्यिक गतिविधियाँ कानपुर में ही रहकर निखरी। प्रेमचन्द लमही गाँव के रहने वाले थे, वे उर्दू पत्रिका जमाना में नियमित छपते थे। उनके मन में हिन्दी में लिखने की अकुलाहट थी। सौभाग्य से वे मारवाड़ी विद्यालय कानपुर में प्रधान अध्यापक होकर आये। सरस्वती पत्रिका पूरे देश में प्रसिद्ध हो चुकी थी। वे उसमें हिन्दी रचनायें छपवाना चाहते थे। उन्हें ज्ञात हुआ कि पं0 विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक नियमित सरस्वती में छप रहे थे। कौशिक जी भी उर्दू में ''रागिब'' के उपनाम से काव्य रचनायें छपवाते थे। उनका दया नारायण निगम से अच्छा परिचय था। प्रेमचन्द जी ने कौशिक जी की सहायता से सरस्वती में अपनी कहानी छपवाई, उसके उपरान्त उन्होंने 250 के लगभग कहानियाँ और कई उपन्यास लिखे। अन्य प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी भी कुछ समय तक कानपुर में रहे थे।

कौशिक मंडली के एक अन्य स्तम्भ बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' भी काव्य क्षेत्र में अपना लोहा मनवा चुके थे उनका कण्ठ भी अत्यन्त सुरीला था। वे मंचों में काव्य पाठ करते, उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि उनके बिना मंच अधूरा ही रहता। ऐसे ही कवि गया प्रसाद शुक्ल सनेही जी भी थे जिन्होंने काव्य क्षेत्र में कानपुर का नाम आगे बढ़ाया।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव ने तब से कहानियाँ लिखना प्रारम्भ कर दिया था जब वे नवीं कक्षा के विद्यार्थी थे । उनकी प्रथम कहानी गणेश शंकर विद्यार्थी के सहयोग से ''हिन्दी मनोरंजन'' पत्रिका में छपी थी। बाद में उन्होंने कई ऐतिहासिक उपन्यास लिखे।

कानपुर के एक अन्य प्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार हैं भगवती प्रसाद बाजपेई जिन्होंने 400 से अधिक कहानियाँ तथा 30 से अधिक उपन्यास लिखे। पत्रकारिता में गणेश शंकर विद्यार्थी का कोई सानी नहीं था। उनके क्रान्तिकारी लेख (प्रताप पत्र जो उनके द्वारा सम्पादित था छपते थे) में जिनके कारण वे कई बार जेल भी गये थे।

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है, कानपुर साहित्यिक रूप से अत्यन्त जागरूक एवं समृद्ध मंच रहा। इस कड़ी को अनेक कवियों, कहानीकारों, उपन्यासकारों ने आगे बढ़ाया। जिनमें शिव वर्मा, मन्नूलाल शील, प्रतीक मिश्र, सिन्दूर जी, देवी प्रसाद राही तथा प्रमोद तिवारी का नाम उल्लेखनीय है। कहानीकारों में सुनील कौशिक, सतीश जमाली ने कानपुर का नाम रोशन किया। वर्तमान में काव्य मंच अत्यन्त जीवन्त है। कविता, गीत, गजल, दोहे सभी विधाओं पर कवि लिख रहे हैं। प्रत्येक का नाम यहाँ उल्लेख करना सम्भव न होने के कारण प्रसिद्ध लेखकों के नामों का वर्णन किया जा रहा है। इसमें वरीयता के क्रम को न ध्यान में रखकर याददाश्त के आधार पर नामों का उल्लेख किया जा रहा है। श्री अवध बिहारी श्रीवास्तव, श्री सुनील बाजपेई, श्री वृजनाथ श्रीवास्तव, श्री हरिलाल मिलन, श्री सतीश गुप्त, श्री लोकेश शुक्ल, श्री सुरेश गुप्त राजहंस, डॉ. मधु प्रधान, डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ. कमलेश द्विवेदी, डॉ कमल मुसद्दी, डॉ पंकज चतुर्वेदी, श्री जयराम सिंह गौर, श्री जयराम सिंह जय, श्री विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी, श्री सुरेन्द्र गुप्त सीकर, डॉ. राकेश शुक्ल, श्री श्याम सुन्दर निगम, श्री संदेश तिवारी, श्रीमती शशि शुक्ला, श्रीमती मधु श्रीवास्तव, श्रीमती मंजू श्रीवास्तव, श्री आजाद कानपुरी, श्री रामकृष्ण प्रेमी, श्री पंकज परदेशी, डॉ. अवधेश दीक्षित, श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री विनोद श्रीवास्तव, डॉ. वी0 एन0 सिंह, श्रीमती अंजली सागर, श्रीमती नूपुर राही, श्री अब्दुल हमीद इदरीसी, दर्द कानपुरी, सुश्री माहे तिलक सिद्दीकी, श्री जौहर कानपुरी, सुश्री शबीना अदीब, प्रो0 हसनाट, श्री जावेद गोंडवी, श्री वीरेन्द्र आस्तिक, श्री शैलेन्द्र शर्मा, डॉ. प्रभा दीक्षित, सुश्री वीना सिंह, उदय, सुश्री सफलता सरोज, डॉ. राधा शाक्य, डा0 प्रेम कुमारी मिश्रा, डा0 दिलीप दुबे, श्री चक्रधर शुक्ला, श्री अशोक बाजपेई, श्री रमेश दीक्षित आदि हैं।

कहानी एवं उपन्यास लेखकों के नाम इस प्रकार हैं। पदमश्री गिरिराज किशोर, श्री प्रियवंद, श्री राजेन्द्र राव, श्री अमरीक सिंह दीप, श्री गोविन्द उपाध्याय, श्री राजकुमार सिंह, श्री श्याम सुन्दर चौधरी, श्री हरभजन सिंह मेहरोत्रा, श्री नीलाम्बर कौशिक, सुश्री प्रतिमा श्रीवास्तव, सुश्री प्रियंका गुप्ता, सुश्री प्रेम गुप्ता मानी, श्री गोपाल खन्ना, श्री धनंजय कुमार सिंह, सुश्री मीना पाठक, श्री हरिलाल मिलन, डा0 सुषमा त्रिपाठी, सुश्री संध्या त्रिपाठी, सुश्री अनीता मिश्रा, सुश्री शशि श्रीवास्तव, सुश्री उमा विश्वकर्मा, श्री राजेश कदम, श्री कैलाश चन्द्र शर्मा, श्री जयराम सिंह गौड़, सुश्री शशि शुक्ला आदि।

समीक्षक आलोचक भी कानपुर का नाम सम्पूर्ण प्रदेश में रोशन किये हैं, उनमें मुख्य हैं, डॉ दया दीक्षित, डॉ. राकेश शुक्ला, डॉ. पंकज चतुर्वेदी, श्री दिनेश प्रियमन तथा डॉ. कमल मुसद्दी आदि है उपरोक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है, कानपुर साहित्य के प्रति सजग एवं जागरूक है, यहाँ के रचनाकार पूरे देश में प्रसिद्ध हैं तथा अपनी अलग पहचान बनाये हुये हैं।